International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 05, No. 01(I), January - March, 2023, pp. 97-100

सत्य और अहिंसा की अवधारण में गाँधीजी के विचार

डॉ. अभिषेक कुमार*

प्रस्तावना

सत्य ही ईश्वर है–महात्मा गाँधी

गाँधी ने कहा, ''सत्य न केवल हमारी अवधारणा का सापेक्ष सत्य है बल्कि पूर्ण सत्य, शाश्वत सिद्धांत, जो कि ईश्वर है।'' इस प्रकार, जबकि निरपेक्ष सत्य ईश्वर है, सापेक्ष सत्य कुछ ऐसा है जिसे हम सत्य के रूप में देखते हैं। गाँधी जी सत्य पर जोर देते रहे हैं, क्योंकि सत्य उनके लिए ईश्वर का पर्याप्य है। झूठ की बैसाखी पर एक स्वस्थ समाज टिक नहीं सकता। यहाँ पर वह नैतिकता को भी सत्य के साथ जोड़ देते हैं। ईश्वर के प्रति निष्ठा या आस्था, सत्य के प्रति प्रतिबद्धता और नैतिक बल–इन तीनों तत्वों को वह अपने जीवन में उतारने हैं।

गाँधी जी के शब्दों में :– 'लाखों–करोड़ों गूंगो के ह्रदयों में जो ईश्वर विराजमान है, मैं उसके सिवा अन्य किसी ईश्वर को नहीं मानता। वे उसकी सत्ता को नहीं जानते, मैं जानता हूँ। मैं इन लाखो–करोड़ों की सेवा द्वारा उस ईश्वर की पूजा करता हूँ जो सत्य है अथवा उस सत्य की जो ईश्वार है।'

अंहिसा

गाँधीजी कहते है कि ''अहिंसा कायर का कवच नहीं हैं अपितु यह बहादुरी का उच्चतम गुण है।'' गाँधी जी का मानना था कि जो व्यक्ति हिंसा की राह पर चलते है वे विनाश की ओर बढ़ते है और जो अहिंसा के पथ पर चलते है वे परम सत्य की प्राप्ति करते है तथा दूसरो का भी सत्य से परिचित कर बातें हैं। गाँधी जी कहते है की लालची और काय व्यक्ति कभी भी अहिंसा का पुजारी नहीं हो सकता।

अहिंसा का अर्थ

अहिंसा का सामान्य अर्थ हैं ''किसी की हिंसा न करना, किसी भी प्राणी को मानसिक या शारीरिक चोट न पहुँचाना, मार–पीट न करना आदि।''

गाँधी जी का मानना था कि ''अहिंसा प्रेम का पर्यायवाची है।'' गाँधी जी का कहना था की सभी व्यक्तियों और जीवधारियों के साथ प्रेम का व्यवहार किया जाना चाहिए। महात्मा गाँधी का विश्वास था कि प्रेम में वह शक्ति है जिसकी मदद से असंभव को भी संभव किया जा सकता हैं।

गाँधी जी ने कहा है ''अहिंसा का अर्थ प्रेम का समुद्र और बेर भाव का त्याग है। अहिंसा में सफल होने के लिए लगन का आवश्यक है यदि लगन नहीं होगी तो व्यक्ति में अहिंसा के लिए उत्कंठा और उतावलापन नहीं होगा। इसलिए हमेशा व्यक्ति को साहस, लगन और धैर्य के साथ अहिंसा के सिद्धांतों को पालन करना चाहिए। अहिंसा में दिनता, भीरूता बिल्कुल न हो डरकर भागना भी नहीं होना चाहिए। अहिंसा में दृढ़ता, वीरता, तथा निश्चलता होनी चाहिए।

* सहायक प्राध्यापक (अतिथि), गणेश दत्त महाविद्यालय, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार।

हमारे जीवन में कभी–कभी कुछ ऐसी परिस्थितियों भी बन जाती है जिनमें बाध्य होकर कुछ न कुछ हिंसा करनी ही पड़ती है। इसलिए गाँधी जी कहते है कि ''जिस प्रकार अपने रोगी के शरीर पर रोगी की भलाई के लिए चाकू चलाना चिकित्सक (डॉक्टर) के लिए हिंसा का कार्य नहीं बल्कि विशुद्ध रूप से अहिंसा का पालन है, उसी प्रकार किन्हीं अनिवार्य परिसिति में एक व्यक्ति का उससे भी आगे बढ़ने की और पीड़ित के कष्ट निवारण हेतू उसे मार डालने तक की जरूरत हो सकती हैं। उदाहरण के दौर पर किसी ऐसा व्यक्ति को ले लिजिए जिसे को भयानक रोग हैं और वह हर पल तड़प रहा है और ठीक करने का कोई इलाज नहीं है वहाँ पर यह बात लागू होती है।

अहिंसा का स्वरूप

- अहिंसा मानव जाति का नियम है और यह पशुबल से कहीं अधिक महान तथा श्रेष्ठ है।
- यह अंततः उनके लिए उपयोगी नहीं है जिन्हें प्रेम ईश्वार में जीती–जागती आस्था नहीं है।
- अहिंसा मनुष्य के स्वाभिमान और आत्मसम्मान की पूरी तरह रक्षा करती है, लेकिन जमीन–जायदाद या चल संपत्ति के स्वामित्व को सदा संरक्षण प्रदान नहीं करती, हालांकि अहिंसा का आभ्यासिक पालन–संपत्ति की रक्षा के लिए सशस्त्र आदमी रखने की अपेक्षा ज्यादा कारगर सुरक्षा प्रदान करता है। अहिंसा की प्रकृति ही ऐसी है कि वह गलत तरीके से कमाए गए लाभों और अनैतिक कृत्यों की रक्षा करने में कोई मदद नहीं करती।
- अहिंसा के मार्ग पर चलने वाले व्यक्तियों और राष्ट्रों को अपनी प्रतिष्ठा के अलावा सब कुछ बलिदान करने (राष्ट्रों को अपने अंतिम नागरिक की बलि तक) के लिए तैयार रहना चाहिए। अतः अहिंसा का अन्य देशों पर अधिकार कर बैठने अर्थात सामाज्यवाद जो स्पष्टतया अपनी रक्षा के प्रयोग पर आधारित होता है, के साथ कोई मेल नहीं है।
- अहिंसा ऐसी शक्ति है जिसे सब साथ सकते हैं बच्चे, बुढ़े स्त्री–पुरूष या प्रौढ़ व्यक्ति शर्त यही है कि उन्हें प्रेम के ईश्वर में जीवित आस्था हो वे समस्त मानव जाति को एक समान प्रेम करते हो। अहिंसा को जीवन का नियम मान लेने पर ये केवल व्यक्ति के इक्का–दुक्का कृत्योंपर ही लागू न हो बल्कि उसके समूचे व्यक्तित्व को अनुप्रणित करने वाली होनी चाहिए।
- यह मानना बहुत गलत है कि अहिंसा का नियम व्यक्तियों के लिए तो ठीक है पर मानवसमूहों के लिए कारगल नहीं है। गाँधी जी अलिसा के इस स्वरूप के आधार पर ही एक ऐसी तकनीक का विकास करते हैं जो संघर्ष को निपटाने में सहायक होती है। गाँधी इसे सत्याग्रह का नाम देते है। गाँधी द्वारा प्रस्तुत सत्याग्रह ऐसा सिद्धांत है।

अहिंसा एवं हिंसा में अंतर

शाब्दिक रूप से अहिंसा शब्द अ+हिंसा के योग से बना है। अतः अहिंसा का शाब्दिक या सामान्य अर्थ है–जो हिंसा न हो। इस प्रकार किसी की हत्या न करना या किसी प्राणी को कष्ट न पहुँचाना अहिंसा है, जबकि हिंसा का अर्थ इसके ठीक विपरीत यानी किसी की हत्या करना या किसी प्राणी को कष्ट पहुँचाना है।

हिंसा और अहिंसा में बहुत बड़ा अंतर है। हिंसा नकारात्मकता का प्रतीक है, तो अहिंसा सकारात्मकता का प्रतीक है। हिंसा बुराई का प्रतीक है तो अहिंसा अच्छाई का प्रतीक है। हिंसा किसी जीव के जीने के मूल अधिकारों का हनन है तो अहिंसा उस जीवन के प्रति दया भाव की भावना है।

अहिंसा के दो पक्ष

अहिंसा के दो पक्ष है– नकारात्मक तथा सकारात्मक कोई प्राणी काम, क्रोध तथा विद्वेष से वशीभूत होकर कोई कार्य करता है तो वह इसका नकारात्मक रूप है। जिस प्रकार हिंसा का आधार विद्वेष होता है, उसी प्रकार अहिंसा का आधार प्रेम है। अहिंसा का व्रत लेने वाले साधक अपने उग्रतम शत्रु से भी जीवित रहता है जैसे पिता बुरा कार्य करने पर भी अपने पुत्र से स्नेह करता है। वह शत्रु की बुराई से घृणा करता है ना कि

शत्रु से। अहिंसा और प्रेम की शक्ति से वह विनाश की बुराई करने का यत्न करता है। वह स्वयं कृपा पूर्वक क्षमा कर देता है, शत्रु को हानि नहीं पहुँचाता। अहिंसा का दूसरा तत्व अनंत गाथा है, यदि अहिंसक को अपने प्रयास में शीघ्र सफलता नहीं मिलती तो वह निराश नहीं होता। उसका दृढ़ विश्वास रहता है कि अहिंसा अचूक ब्रह्मास्त्र है और अंत में अवश्य सफल होगा।

गाँधी जी ने अहिंसा की निम्नलिखित तीन अवस्थाएँ बताई है

- जागृत अहिंसा– इस वी पुरूषों की अहिंसा भी कहते हैं। अहिंसा है जो किसी दुःख पूर्ण आवश्यकता से उत्पन्न ना होकर प्रकृति की स्वाभाविक कथनी से उत्पन्न होता है। इसके दत्तक ग्रहण करने वाले अहिंसा को बोझ समझकर स्वीकार नहीं करते बल्कि आंतरिक विचार के झटके या नैतिकता के कारण स्वीकार करते हैं। सबल व्यक्ति इसे अपनाते हैं और वे शक्ति प्राप्त कर भी शक्ति का तनिक सा भी प्रयोग नहीं करते। अहिंसा के इस रूप को केवल राजनीतिक क्षेत्रों में ही नहीं बल्कि जीवन के सभी क्षेत्रों में ही नहीं बल्कि जीवन के सभी क्षेत्रों में उच्च के साथ अपनाया जाना चाहिए। अहिंसा के इस रूप में असंभव को संभावना में बदलना और श्रृंखला को हिला देने की अपार शक्ति निहित है।
- उपयोगिता पूर्ण– इस प्रकार की अहिंसा वह है जो जीवन के किसी क्षेत्र में विशेष आवश्यकताओं के अनुसार उपयोगिता एक नीति के रूप में अपनाई जाती है। यह अहिंसा निर्बल व्यक्ति का अहिंसा है या ट्वीट व्यक्ति का निष्क्रिय प्रतिरोध। इसमें नैतिक विश्वास के कारर्ण वर्न निर्बलता के कारण ही अहिंसा का प्रयोग किया जाता है। हालांकि यह हिंसा जागृत की भाँति प्रभावशाली नहीं है, फिर भी यदि इसकी ईमानदारी, सच्चाई और निहितता से जायज है तो इससे कुछ सीमा तक लक्ष्य की प्राप्ति हो सकती है। आगे चलकर महात्मा गाँधी ने इस प्रकार की अहिंसा को स्वीकार करते हुए कहा था ''निर्बलों की अहिंसा जैसी कोई चीज नहीं है, दुर्बलता और अहिंसा परस्पर विरोधी है।''
- कायरों की अहिंसा – कई बार डरपोक और कायर लोग भी अहिंसा का दंभ भरते हैं। ऐसे लोगों की मानक अहिंसा को अहिंसा नर 'निष्क्रिय हिंसा' मानते हैं। उनका विश्वास था कायरता और अहिंसा पानी और आग की भाँति एक साथ नहीं रह सकते। अहिंसा वीरों का धर्म है और अपनी कायरता को अहिंसा की ओट में छिपाना निंदनीय है। यदि कायरता और हिंसा में किसी एक का चुनाव करना हो तो ग्रंथकारिता हिंसा को स्वीकार करते हैं। इस संबंध में उनका यह स्पष्ट विचार है कि ''किसी भी स्थिति में हमारे ह्रदय में हिंसा भरी हुई है तो हम अपनी कमजोरी को छुपाने के लिए अहिंसा को मान लेते हैं, इससे हिंसक होना अधिक अच्छा है।

गाँधीजी की अहिंसा की विशेषताएँ

गाँधीजी की हिंसा की दो प्रमुख विशेषताएँ हैं– पहली विशेषताएँ सूक्ष्म और विशिष्ट विवेचना तथा दूसरा इसके क्षेत्र का विस्तार करके इसे नई गति तथा नया विस्तार प्रदान करता है।

- गाँधीजी से पहले अहिंसा का सामान्य अर्थ किसी जीव का प्राण न लेना और इसे खान–पान के विषय तक सीमित रखना। माँसाहारी अहिंसक हो सकता है, फलाहारी घोर हिंसा देखते हैं। एक व्यापारी का नजरिया बताता है, ग्राहक को ठगता है, कम तोलता है, वह व्यापारी चींटी को आटा डालता है, फलाहार करता है। फिर भी यह व्यापारी उस माँसाहारी की तुलना में अधिक हिंसक है, जो माँसाहार भी ईमानदार है और किसी का धोखा नहीं देता है। इस प्रकार महात्माजी ने जीव हिंसा की विवेचना करते हुए दमनकारी परिभाषा और सीमा में नया क्रांतिकारी परिवर्तन और विस्तार किया।
- अहिंसा के कार्यक्षेत्र का विस्तार है। महात्मा गाँधी ने अहिंसा को व्यक्तिगत और पारिवारिक क्षेत्र की शटर परिधि से निकालकर इसे समाजिक और राजनीतिक क्षेत्रों में सभी प्रकार के अन्याय का प्रतिकार करने का शस्त्र बनाया। इसे ऋृषि–मुनियों तक मर्यादित ना भरण सार्वजनिक और सार्वभौम बनाया गया। गाँधी जी के शब्दों में ''अहिंसा यदि व्यक्तिगत गुण है तो मेरे लिए त्याज्य वस्तु है। मेरी अहिंसा की कल्पना व्यापक है यह करोड़ो व्यक्तिगत आचार के नियम नहीं है, वे समुदाय जाति और राष्ट्र की

नीति के रूप में ले सकते हैं। अहिंसा सबके लिए है, सभी जगहों के लिए है, हर समय के लिए।'' हरिजन सेवक में उन्होंने लिखा ''हम सत्य और अहिंसा को केवल व्यक्ति की वस्तु नहीं बना रहे हैं बल्कि ऐसी वस्तु बना रहे हैं जिस पर समूह, जातियाँ और राष्ट्र अमल करने योग्य है।'' अहिंसा के विषय में महात्मा गाँधी की यह सबसे बड़ी मौलिक पहचान थी। भारत की स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए राजनीतिक क्षेत्र में अहिंसा के सफल प्रयोग से उन्होंने अपने दावों को सत्य को सिद्ध किया।

निष्कर्ष

गाँधी जी के जीवन में किसी को शत्रु नहीं माना जाता है शायद इसी गुण के कारण महात्मा कहलाये। उनका यह मानना था कि जैसे वे एक मित्र से मिलते–जुलते शत्रु से भी प्रेम करना चाहते हैं। समालोचकों का दावा है कि एक व्यक्तिगण गुण के रूप में अहिंसा कितना ही आदर्श और अनुगामी क्यों न हो, स्थिर प्रयोग के लिए शास्त्र के रूप में यह एक क्षण के लिए भी कसौटी पर खरी नहीं उतरी।

गाँधी जी ने जीवन भर सत्य और अहिंसा को अपने मूल मंत्र के रूप में विकसित और पूर्णतः से उसे जीवन में उठाएँ।

गाँधी जी का मानना है कि ईश्वर का नाकार हो सकता है लेकिन सत्य को नकारना संभव नहीं है। अंधेरी या गठजोड़ पर मिलने वाली बात नहीं है। यह तो संसार में रहना ही संभव है। यदि व्यक्ति दूसरे के दर्द में सहाकय हो जाए तो सत्य के स्वयं दर्शन हो जाएंगे।

गाँधी जी ने अहिंसा का साधन के रूप में स्वीकार किया। अहिंसा के सामान्य अर्थों को कष्ट न देना है। सत्य और अहिंसा ऐसे अस्त्र हैं। जिसके द्वारा संसार को बहकाया जा सकता है–विरोधी को अपने पति प्रेम–सद्भावना धारण के लिए मजबूर किया जा सकता है।

वर्त्तमान संदर्भ में अहिंसा की व्यावहारिकता पर लोगों का विश्वास नहीं हो रहा है। आज देश में अलग–अलग तरह का महौल है। चारों तरफ घमासान–सा नजर आता है। मानवीय मूल्य मृतप्राय हो गए हैं। यकीन की धूप भी धूमिल हो गई है।

इसलिए यह कहा जा सकता है कि अहिंसा एवं सत्य के प्रति आस्था का उदय आध्यामिक एवं ईश्वरीय प्रेम से ही को सकता है और गाँधी जी को ईश्वर मानते थे उनके लिए सत्य ही ईश्वर था जो एक वचनबद्ध था। यह ठीक है कि किसी व्यक्ति की विशेष आस्था गाँधी की तरह ईश्वर में न हो उनके अहिंसा के अस्त्र को नाकारा नहीं जा सकता।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. महात्मा गाँधी (1926); यंग इण्डिया, मद्रास और गणेशन कंपनी
2. महात्मा गाँधी, (1942), हरिजन सेवक, नवजीवन प्रकाशन, मनपाड़ा।
3. धीरेन्द्र मोहन, (1983); महात्मा गाँधी का दर्शन, बिहारी हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पातपुर
4. महात्मा गाँधी, (1986); अहिंसा और सत्य, उत्तर प्रदेश, गाँधी स्मारक स्मारक, सेवापुरी, वाराणसी
5. दिवाकर, रंगनाथ, (1990); लेख सामान्य आध्यात्मक का दृष्टांत, गाँधी, गाँधीमार्ग, गाँधी शांति प्रतिष्ठान, नई दिल्ली
6. कोचर, कन्हैण लाल, (1997); गाँधी दर्शन, अनुपम प्रकाशन, जयपुर।
7. महात्मा गाँधी (1998); दक्षिण अफ्रीका का सत्याग्रह, नवजीवन प्रकाशन मंदिर,
8. महात्मा गाँधी, (1999); अहिंसा और सत्य, उत्तर प्रदेश, गाँधी स्मारक सेवा, पुरी, वाराणसी।
9. महात्मा गाँधी (2000); आत्मकथा, नवजीवन प्रकाशन,
10. पोद्दार, हनुमान; महाभारत शांतिपर्व, अध्याय 162, श्लोक 8, गीता प्रेस, गोरखपुर

❖◆❖